कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

अक्टूबर–दिसम्बर, 2025

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

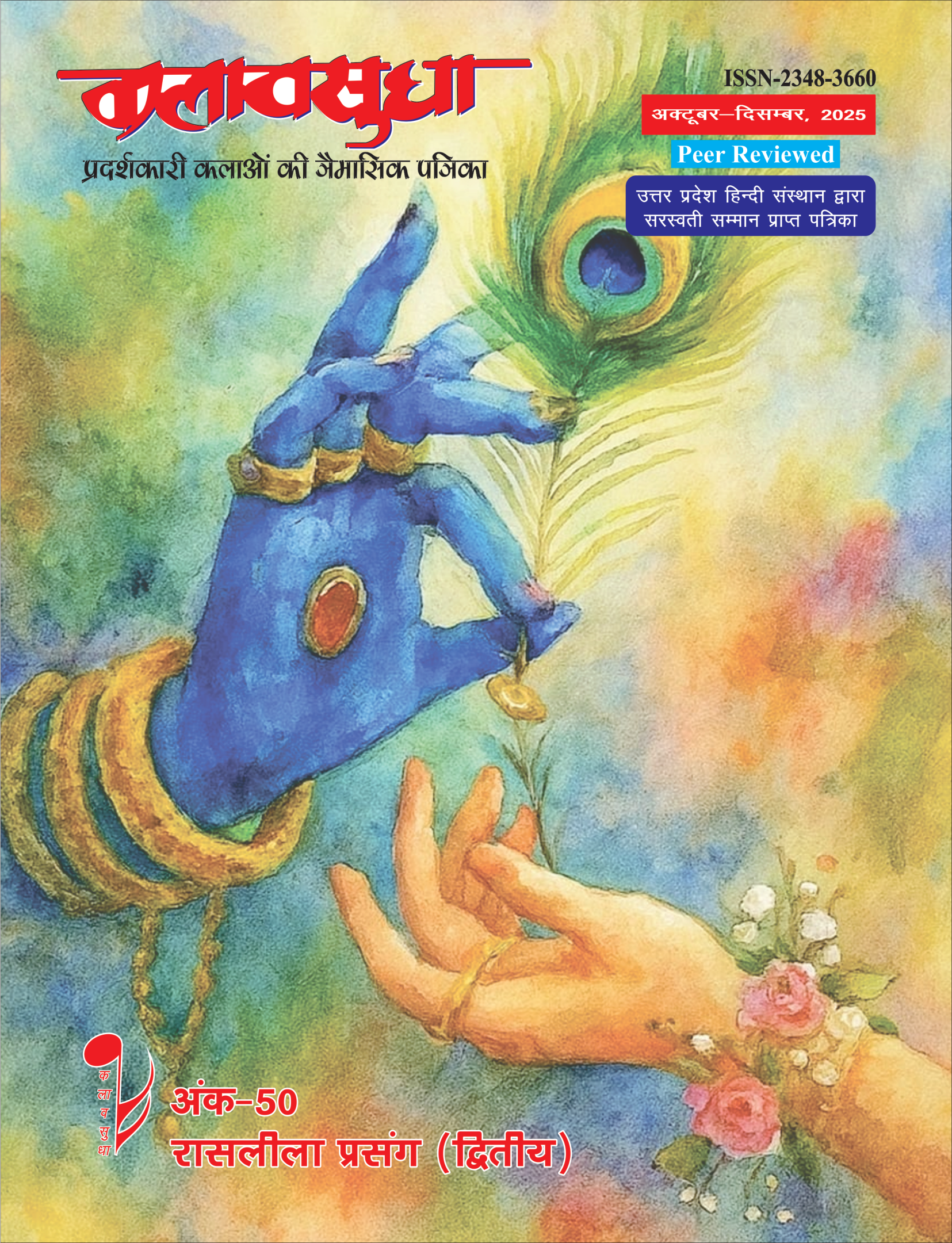

अंक-50

रासलीला प्रसंग (द्वितीय)

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 25 ■ अंक : 50 ■ अक्टूबर–दिसम्बर, 2025

ISSN-2348-3660

प्रकाशन स्थापना के 25 वर्ष

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
3. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
4. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
5. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
6. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
7. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
8. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
9. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
2. प्रो. ऋचा नागर
3. डॉ. अरविन्द कुमार
4. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
5. भारत रत्न भार्गव
6. डॉ. गौतम चटर्जी
7. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
8. प्रो. डॉ. सुबाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
9. डॉ. अपूर्वा अवस्थी
10. डॉ. जय शंकर राय

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**

मो. : **8052557608** (प्रधान संपादक)

मो. : **9889835202** (संपादक)

मो. : **8009800436** (सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 25 ■ अंक : 50 ■ अक्टूबर–दितम्बर, 2025

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सिलसिला.....

रासलीला प्रसंग-द्वितीय

	कहना–सुनना		4
1.	रासलीला : एक अध्ययन	–प्रो. डा. चंद्रशेखर कणसे	11
2.	'ब्रज में रासलीला की परम्परा और वर्तमान स्थिति'	–डा. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'	14
3.	नंददास रचित रास पंचाध्यायी : रासलीला का महत्त्वपूर्ण पाठ्यस्रोत	–राजश्री ओक	18
4.	मणिपुरी रास : एक भव्य विरासत	–प्रो. एलाङबम विजय लक्ष्मी	20
5.	संस्कृत साहित्य में रास	–आचार्य पं. श्री लक्ष्मणदास शास्त्री, चतुर्वेदी	24
6.	ब्रज की रासलीला और उनके प्रमुख विषय	–डा. उषा बनर्जी	29
7.	आत्मा परमात्मा का मिलन ही रास है –	–डा. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'	38
8.	भारतीय लोक नृत्य, संगीत, नाट्य का संगम रासलीला	–डा. जयशंकर	41
9.	ब्रज की रासलीला : पाँच शताब्दियों का सफर	–उषा यादव	46
10.	समझ और सुविधा की साँचे में ढलती कला : रासलीला पर आलोचात्मक विश्लेषण	–कृतिका रघुवंशी	49
11.	श्री कृष्ण की रासलीला	–डा. राकेश कुमार	53
12.	मणिपुरी रासलीला : परंपरा और प्रयोग	–एस. साधना चानू	59
13.	रासलीला में निहित कथक नृत्य के आंतरिक तत्व	–डा. स्वाति अजय मेहता	63
14.	रासलीला : आध्यात्मिक प्रेम की काव्यात्मक अभिव्यक्ति और उसके सांस्कृतिक सन्दर्भ	–तेजस पूनियां	65
15.	रासलीला में अभिनय : प्रशिक्षण, प्रासंगिकता एक समकालीन सन्दर्भ	–डा. कुलिन कुमार जोशी	67
16.	मणिपुर की रासलीला : नृत्य में बँधा भक्तिमय प्रेम	–डा. मणि रंजन राय	70
17.	भक्त–रसिक, रास और रासलीला : एक दृष्टि	–डॉ0 सुनीता द्विवेदी	74
18.	ग्रन्थों में रासलीला	–डॉ. शालिनी साहू	76
19.	रास रस	–डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा	78
20.	रास लीला भक्ति, कला और संस्कृति का अद्भुत संगम	–डॉ0 उपासना दीक्षित	82

21.	बचपन, बीज और ब्रज की रासलीला	–कुसुम वर्मा	84
22.	लोक नाट्य, "रास लीला"–(सन्दर्भ होली लीला)		
	श्रीकृष्ण को नित्य रास, अरु होरी लीला	–डा. उषा बनर्जी	88
23.	रासलीला की परंपरा और हिंदी साहित्य	–डा. अलका तिवारी	101
24.	रास–महारास	–बबिता पाण्डेय	107
25.	श्री घमण्डदेव जी का संक्षिप्त परिचय		108
	(प्र0 सम्पादक–श्री गोविन्दशरण जी शास्त्री, साहित्यरत्न)		
26.	रास संबंधी कुछ सत्य घटनायें	–साभार : सर्वेश्वर पत्रिका वृन्दावन	112
27.	प्राकृत साहित्य में रास लीला	–डा. पत्रिका जैन	116
28.	नारीवादी दृष्टि से रासलीला	–डा. अंकिता त्रिपाठी	117
29.	The Tradition of Raas Lila in Braj with Reference to Kathak	–Dr. Preeti Damle	120
30.	Rasalila in Braj, Manipur, and Gujarat :		
	A Comparative Study of Regional Forms	–Dhawani Bharat Kumar Shad	123

पुस्तक समीक्षा

1.	पं. राधेश्याम कथावाचक की लोक–दृष्टि	–डा. नितिन सेठी	135
2.	समीक्षा : लोक शास्त्र के नये प्रतिमान : लोक विमर्श	–अमित काम	137
3.	खारी नदी : हर स्त्री की कहानी	–डा अपूर्वा अवस्थी	139

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
प्रतिमा सिंह
2/292, विनम्र खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ–226010 (उ.प्र.)
मो. : 7042239212

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
हरीपाल
राहुल
सोनू

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य **200/–**

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–**8,** डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – **226029**
वेबसाइट : **www.kalavasudha.com** ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**
मो. : **8052557608, 9889835202**

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024/624/00002209
मो. : 9839011924 से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–**8,** डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – **226029** से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सुधी पाठक गण।

नमस्कर।

''ब्रज की रासलीला'' यह विषय पिछले अंक में भी प्रस्तुत किया गया और अब यह रासलीला पर आधारित द्वितीय अंक भी विशेष रूप से उसकी प्रयोग परम्परा पर ही आधारित है। रासलीला का स्वरूप जितना आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना ही एक प्रयोग परम्परा के रूप में भी अति महत्वपूर्ण है। रासलीला कृष्ण का एक रहस्यमयी सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रकाश है जिसे समझना सभी के बस की बात नहीं है। उसे समझने के लिये श्रीकृष्ण के दिव्य लीलामय व्यक्तित्व ही नहीं बल्कि उनके रहस्यमयी मुस्कान का अर्थ भी आत्मसात करना होगा। रासलीला में वर्णित श्रृंगार रस, श्रृंगार नहीं बल्कि उसका उज्ज्वल पक्ष यानी उज्ज्वल रस है जिसका स्थायी भाव ''रति'' नहीं बल्कि काम वासनाओं के प्रभाव मुक्त ''माधुर्य'' स्थायी भाव है। जिसे समझाने के लिये भगवत रसिक जी ने कहा–

प्रीति की रीति रंगीलो ही जाने
यद्यपि सकल लोक चूड़ा मणि ह्वै दीन
अपन पौ हारै।
या
भगवत रसिक रसिक की बातें रसिक बिना
कोऊ समुझि सकै ना।

ब्रज का जीवन सच पूछो तो सम्पूर्ण विश्व के खुश हाल जीवन का प्रतीक है जहाँ की 1. रेणू अर्थात् उपजाऊ धरती 2. धेनू अर्थात् व्यावसायिक सुख समृद्धि और 3. वेणू अर्थात् मानव हृदय में झंकृत होता शुद्ध सकारात्मक प्रेम का स्वर ही आधार है। यह प्राकृतिक सम्पदा को नष्ट नहीं करना ही रासलीला का संदेश है। प्रेम के उज्ज्वल पक्ष को प्रतिपादित करना रासलीला का संदेश है, कृष्ण के स्वरूप का अनौपचारिक प्रकाश रास लीला का संदेश है। प्रेम और वैराग्य की पराकाष्ठा को प्रकट करना रासलीला का संदेश है। प्रेम करने की विधि को प्रकाशित करना रासलीला का संदेश है। हजारों अभाव प्रभाव और स्वभावों की विपरीतता में भी प्रेम का अस्तित्व और अधिक दृढ़ होता है यह रासलीला का संदेश है, संसार की सभी कलायें रासबिहारी से सुहागन है। यह भी रासलीला का संदेश है। कृष्ण के संदर्भ में सोलह कलाओं की बात आती है यह सोलह कलायें चंद्रमा के कम अधिक संकेत से उत्पन्न प्रभावों की बात हो सकती है वरना कृष्ण तो पूरी चौंसठ कलाओं में निपुण है यह भी रासलीला का संदेश है। उनके बिना अस्तित्व निश्प्राण है यह भी रासलीला का ही संदेश है, ज्ञान के स्थान पर प्रेम की प्रतिष्ठा की दृढ़तापूर्वक पताका लहराना भी रासलीला का संदेश है। प्रेम में छोटे से छोटा व्यक्ति भी उतना ही प्रभावशाली रूप में अपनी भूमिका में होता है जितना कि कोई प्रभावशाली व्यक्ति तो यह संदेश भी रासलीला का ही संदेश है। रासलीला के एक स्वामी श्री कुँवर पाल जी ने श्रीकृष्ण के मुख से गाने के लिये प्रेम के संदर्भ में एक रसिया रास में लिखा–

''प्रेम को पंथ हमारो सब जग ते न्यारो,
प्रेम को पंथ....
यामे रोनो सोई हँसी, जीवे जाकू लगे फाँसी
सुख भोगी जो उदासी यही उलटो है पंथ.
पंथ करे जो पयान, यामे गारी सनमान,
अपमान ही है मान, है लवार सोई संत
प्रेम पंथ के आइ लुगाई भोला बनि गयो
साँपन वारो वारो प्रेम को पंथ....

तो ऐसी प्रेम मयी सोच वाले ब्रज में सम्पादित होने वाली रासलीला का संदेश संसार के व्यवहारिक जीवन से पूर्णरूपेण उल्टा है। अब चाहै बुरा लगे या अच्छा है तो है तो रासलीला पर कुछ कहना हरि अनंत हरि कथा अनन्ता है। अतः अब यहाँ उसके अन्य विद्वानों के बीच चर्चित पहलुओं पर चर्चा भी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है उसके बाद ही उसके स्वरूप पर प्रकाश डालने का उपक्रम क्रम प्राप्त है। यथा–

वस्तुतः 'रास' शब्द की परिभाषा "रसानां समूहों रासः" से की गई है और इसकी व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाय तो 'रास' शब्द की व्युत्पत्ति 'रस' धातु में धञ् प्रत्यय के योग से अपत्यार्थ में निष्पन्न हुई है। कुछ विद्वानों ने इस शब्द की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं मानी है। उनमें से प्रथम रास साहित्य के अध्येयता डा० दशरथ ओझा जी हैं जिन्होंने लिखा हैः–

"रास शब्द वस्तुतः संस्कृत भाषा का नहीं है प्रत्युत देशी भाषा का है, जो संस्कृत बन गया है और देशी नाट्य कला को जो रास के नाम से प्रसिद्ध थी रास के नाम से ही संस्कृत ग्रंथों में उद्धृत कर दिया है।"

(हिन्दी नाटक–उद्भव और विकास पृष्ठ–78)

इनके अतिरिक्त डा० डी०आर०मनक्कड़– 'रास का सम्बन्ध "रस्' धातु से न मानकर रास से मानते हुए रास शब्द का अर्थ "जोर से चिल्लाना' करते हैं। (द० टाइम्स आफ संस्कृत ड्रामा पृ. 43

हिन्दी साहित्य कोष में रास की परिभाषा करते हुए लिखा है–"रास रस के बहुबचन, ब्रह्म महारास में गोपियों के बीच एक कृष्ण के अनेक रूप, स्त्रियों और पुरुषों के परस्पर हाथ बांधकर मण्डलाकार नृत्य, चिल्लाहट में संगीत के योग से विकसित नाट्य रूप, रास में परिवेष्टित चंद्र की चंद्रिका पर मुग्ध होकर कृष्ण गोपियों की क्रीड़ा, रहस्यलीला और देशी भाषा के शब्द 'रास' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ माना गया है। आज 'रास' से लोक नाट्य के